Secularism धर्मनिरपेक्षता

In this chapter we will engage in this ongoing debate by asking the following questions:

- What is the meaning of secularism?
- Is secularism a western implant on Indian soil?
- Is it suitable for societies where religion continues to exercise a strong influence on individual lives?
- Does secularism show partiality? Does it 'pamper' minorities?
- Is secularism anti-religious?

इस अध्याय में हम नीचे लिखे कुछ सवालों को पूछ कर इस जारी विमर्श में शामिल होंगे–

- क्या यह उन समाजों के लिए उपयुक्त है जिनमें धर्म का आज भी लोगों के व्यक्तिगत जीवन पर गहरा असर है।
- क्या धर्मनिरपेक्षता भारतीय मिट्टी में रोपा गया एक पश्चिमी पौधा है?
- क्या धर्मनिरपेक्षता में पक्षपात के चिह्न हैं। क्या इससे अल्पसंख्यकों का 'तुष्टीकरण' होता है।
- क्या यह धर्मविरोधी है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

WHAT IS SECULARISM? धर्मनिरपेक्षता क्या है?

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Secularism is first and foremost a doctrine that opposes all such forms of inter-religious domination. This is however only one crucial aspect of the concept of secularism. An equally important dimension of secularism is its opposition to intra-religious domination.

धर्मनिरपेक्षता को सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख रूप से एसा सिद्धांत समझा जाना चाहिए जो अंतर–धार्मिक वर्चस्व का विरोध करता है। हालाँकि यह धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा के महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से केवल एक है। धर्मनिरपेक्षता का इतना ही महत्त्वपूर्ण दूसरा पहलू अंतःधार्मिक वर्चस्व यानी धर्म के अंदर छुपे वर्चस्व का विरोध करना है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

THE WESTERN MODEL OF SECULARISM

All secular states have one thing in common: they are neither theocratic nor do they establish a religion. However, in most commonly prevalent conceptions, inspired mainly by the American model, separation of religion and state is understood as mutual exclusion: the state will not intervene in the affairs of religion and, in the same manner, religion will not interfere in the affairs of the state. Each has a separate sphere of its own with independent jurisdiction.

धर्मनिरपेक्षता का यूरोपीय मॉडल

सभी धर्मनिरपेक्ष राज्यों में एक चीज़ सामान्य है। वे न तो धर्मतांत्रिक हैं और न किसी खास धर्म की स्थापना ही करते हैं। हालाँकि, सर्वाधिक प्रचलित संकल्पना में, जो मुख्यत: अमेरिकी मॉडल द्वारा प्रेरित है, धर्म और राज्यसत्ता के संबंध विच्छेद को पारस्परिक निषेध के रूप में समझा जाता है। राज्यसत्ता धर्म के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी और इसी प्रकार, धर्म राज्यसत्ता के मामलों में दखल नहीं देगा। दोनों के अपने अलग-अलग क्षेत्र हैं, अलग-अलग सीमाएँ हैं।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

No policy of the state can have an exclusively religious rationale. No religious classification can be the basis of any public policy. If this happened there is illegitimate intrusion of religion in the state.

राज्यसत्ता की कोई नीति पूर्णतः धार्मिक तर्क के आधार पर निर्मित नहीं हो सकती। कोई धार्मिक वर्गीकरण किसी सार्वजनिक नीति की बुनियाद नहीं बन सकता। अगर एसा हुआ तो वह राज्यसत्ता के मामले में धर्म की अवैध घुसपैठ मानी जाएगी।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Similarly, the state cannot aid any religious institution. It cannot give financial support to educational institutions run by religious communities. Nor can it hinder the activities of religious communities, as long as they are within the broad limits set by the law of the land. For example, if a religious institution forbids a woman from becoming a priest, then the state can do little about it. If a religious community excommunicates its dissenters, the state can only be a silent witness. If a particular religion forbids the entry of some of its members in the sanctum of its temple, then the state has no option but to let the matter rest exactly where it is. On this view, religion is a private matter, not a matter of state policy or law.

Secularism धर्मनिरपेक्षता

उसी प्रकार, राज्य किसी धार्मिक संस्था को मदद नहीं देगा। वह धार्मिक समुदायों द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थाओं को वित्तीय सहयोग नहीं दे सकता। जब तक धार्मिक समुदायों की गतिविधियां देश के कानून द्वारा निर्मित व्यापक सीमा के अंदर होती हैं, वह इन गतिविधियों में व्यवधान नहीं पैदा कर सकता। उदाहरण के लिए, अगर कोई धार्मिक संस्था औरतों के पुरोहित होने को वर्जित करती है, तो राज्यसत्ता इस मामले में कुछ नहीं कर सकती। अगर कोई धार्मिक समुदाय अपने भिन्न मतावलंबियों का बहिष्कार करता है तो राज्य इस मामले में मूक दर्शक ही बना रह सकता है। अगर कोई खास धर्म अपने कुछ सदस्यों को मंदिर के गर्भगृह में जाने से रोकता है, तो राज्य के पास मामले को यथावत बने रहने देने के सिवा कोई विकल्प नहीं है। इस विचार से धर्म एक निजी मामला है। वह राज्यसत्ता की नीति या कानून का विषय नहीं हो सकता।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

This common conception interprets freedom and equality in an individualist manner. Liberty is the liberty of individuals. Equality is equality between individuals. There is no scope for the idea that a community has the liberty to follow practices of its own choosing. There is little scope for community-based rights or minority rights. The history of western societies tells us why this is so. Except for the presence of the Jews, most western societies were marked by a great deal of religious homogeneity. Given this fact, they naturally focused on intrareligious domination. While strict separation of the state from the church is emphasised to realise among other things, individual freedom, issues of inter-religious (and therefore of minority rights) equality are often neglected.

Secularism धर्मनिरपेक्षता

यह संकल्पना स्वतंत्रता और समानता की व्यक्तिवादी ढंग से व्याख्या करती है। स्वतंत्रता का मतलब है– व्यक्तियों की स्वतंत्रता। समानता का तात्पर्य है– व्यक्तियों के बीच समानता। इमें यह गुंजाइश नहीं है कि किसी समुदाय को अपनी पसंद का आचरण करने की स्वतंत्रता रहे। समुदाय आधारित अधिकारों अथवा अल्पसंख्यक अधिकारों की कोई गुंजाइश नहीं है। पश्चिमी समाजों का इतिहास बताता है कि एसा क्यों है। यहूदियों की उपस्थिति को छोड दिया जाय तो अधिकांश पश्चिमी समाज काफी हद तक धार्मिक रूप से सजातीय थे। स्वभाविक रूप से इस तथ्य के चलते उनके केंद्र में अंत:धार्मिक वर्चस्व ही रहता था। जहां अनेक मामलों में वैयक्तिक स्वतंत्रता को साकार करने के लिए चर्च से राज्य के संबंध विच्छेद पर कड़ाई के साथ बल दिया जाता था वहीं अंतर–धार्मिक समानता और इसीलिए अल्पसंख्यकों के अधिकार के मुद्दे प्राय: उपेक्षित रह जाते थे।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Finally, this form of mainstream secularism has no place for the idea of statesupported religious reform. This feature follows directly from its understanding that the separation of state from church/ religion entails a relationship of mutual exclusion.

इस तरह की धर्मनिरपेक्षता में राज्य समर्थित धार्मिक सुधार के लिए कोई जगह नहीं है। यह विशेषता सीधे तौर पर इस समझ से निकलती है कि राज्य और धर्म के अलगाव के लिए इनका पारस्परिक निषेध ज़रूरी है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

NEHRU ON SECULARISM'

'Equal protection by the State to all religions'. This is how Nehru responded when a student asked him to spell out what secularism meant in independent India. He wanted a secular state to be one that "protects all religions, but does not favour one at the expense of others and does not itself adopt any religion as the state religion". Nehru was the philosopher of Indian secularism.

धर्मनिरपेक्षता के बारे में नेहरू के विचार

जब किसी विद्यार्थी ने नेहरू से यह बताने को कहा कि आज़ाद भारत में धर्मनिरपेक्षता का क्या मतलब होगा तो उन्होंने जवाब दिया था –'सभी धमो को राज्य द्वारा समान संरक्षण'। वे एसा धर्मनिरपेक्ष राष्ट चाहते थे जो 'सभी धमो की हिफाजत करे; अन्य धमो की कीमत पर किसी एक धर्म की तरफदारी न करे, और खुद किसी धर्म को राज्यधर्म के बतौर स्वीकार न करे'। नेहरू भारतीय धर्मनिरपेक्षता के दार्शनिक थे।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

NEHRU ON SECULARISM'

Nehru did not practise any religion, nor did he believe in God. But for him secularism did not mean hostility to religion. In that sense Nehru was very different from Ataturk in Turkey. At the same time Nehru was not in favour of a complete separation between religion and state. A secular state can interfere in matters of religion to bring about social reform. Nehru himself played a key role in enacting laws abolishing caste discrimination, dowry and sati, and extending legal rights and social freedom to Indian women.

धर्मनिरपेक्षता के बारे में नेहरू के विचार

नेहरू स्वयं किसी धर्म का अनुसरण नहीं करते थे। ईश्वर में उनका विश्वास ही नहीं था। लेकिन उनके लिए धर्मनिरपेक्षता का मतलब धर्म के प्रति विद्वेष नहीं था। इस अर्थ में नेहरू तुर्की के अतातुर्क से काफी भिन्न थे। साथ ही, वे धर्म और राज्य के बीच पूर्ण संबंध विच्छेद के पक्ष में भी नहीं थे। उनके विचार के अनुसार, समाज में सुधार के लिए धर्मनिरपेक्ष राज्यसत्ता धर्म के मामले में हस्तक्षेप कर सकती है। जातीय भेदभाव, दहेज प्रथा और सती प्रथा की समाप्ति के लिए कानून बनवाने तथा देश की महिलाओं को कानूनी अधिकार और सामाजिक स्वतंत्रता मुहैया कराने में नेहरू ने खुद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

THE INDIAN MODEL OF SECULARISM

Sometimes it is said that Indian secularism is an imitation of western secularism. But a careful reading of our Constitution shows that this is not the case. Indian secularism is fundamentally different from Western secularism. Indian secularism does not focus only on church-state separation and the idea of inter-religious equality is crucial to the Indian conception. Let us elaborate this further.

धर्मनिरपेक्षता का भारतीय मॉडल

कभी–कभी यह कहा जाता है कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता की नकल भर है। लेकिन अपने संविधान को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि एसा नहीं है। भारतीय धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता से बुनियादी रूप से भिन्न है। भारतीय धर्मनिरपेक्षता केवल धर्म आर राज्य के बीच संबंध विच्छेद पर बल नहीं देती है। अंतर–धार्मिक समानता भारतीय संकल्पना के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। हम इस पर और भी विस्तार के साथ सोच–विचार करेंगे।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

The advent of western modernity brought to the fore hitherto neglected and marginalised notions of equality in Indian thought. It sharpened these ideas and helped us to focus on equality within the community. It also ushered ideas of inter-community equality to replace the notion of hierarchy. Thus Indian secularism took on a distinct form as a result of an interaction between what already existed in a society that had religious diversity and the ideas that came from the west. It resulted in equal focus on intra-religious and interreligious domination. Indian secularism equally opposed the oppression of dalits and women within Hinduism, the discrimination against women within Indian Islam or Christianity, and the possible threats that a majority community might pose to the rights of the minority religious communities. This is its first important difference from mainstream western secularism.

Secularism धर्मनिरपेक्षता

पश्चिमी आधुनिकता के आगमन ने भारतीय चिंतन में अब तक उपेक्षित और हाशिए पर रही समानता की अवधारणा को सतह पर ला दिया। उसने इस धारणा को धारदार बनाया और हमें समुदाय के अंदर समानता पर बल देने की ओर अग्रसर किया। उसने हमारे समाज में मौजूद श्रेणीबद्धता को हटाने लिए अंतर–सामुदायिक समानता के विचार को भी उद्घाटित किया। इस तरह भारतीय समाज में पहले से मौजूद धार्मिक विविधता और पश्चिम से आए विचारों के बीच अंत:क्रिया शुरू हुई, जिसके फलस्वरूप भारतीय धर्मनिरपेक्षता ने विशिष्ट रूप ग्रहण किया। भारतीय धर्मनिरपेक्षता ने अंत:धार्मिक और अंतर–धार्मिक वर्चस्व पर एक साथ ध्यान केंद्रित किया। इसने हिंदुओं के अंदर दलितों और महिलाओं के उत्पीड़न और भारतीय मुसलमानों अथवा ईसाइयों के अंदर महिलाओं के प्रति भेदभाव, तथा बहुसंख्यक समुदाय द्वारा अल्पसंख्यक धार्मिक समुदायों के अधिकारों पर उत्पन्न किए जा सकने वाले खतरों का समान रूप से विरोध किया। इस प्रकार, यह मुख्यधारा की पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता से इसकी पहली महत्त्वपूर्ण भिन्नता है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Connected to it is the second difference. Indian secularism deals not only with religious freedom of individuals but also with religious freedom of minority communities. Within it, an individual has the right to profess the religion of his or her choice. Likewise, religious minorities also have a right to exist and to maintain their own culture and educational institutions.

इसी से जुड़ी है दूसरी भिन्नता यह है कि भारतीय धर्मनिरपेक्षता का संबंध व्यक्तियों की धार्मिक आजादी से ही नहीं, अल्पसंख्यक समुदायों की धार्मिक आज़ादी से भी है। इसके अंतर्गत हर आदमी को अपनी पसंद का धर्म मानने का अधिकार है। उसी प्रकार, धार्मिक अल्पसंख्यकों को भी अपनी खुद की संस्कृति और शैक्षिक संस्थाएँ कायम रखने का अधिकार है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

A third difference is this. Since a secular state must be concerned equally with intra-religious domination, Indian secularism has made room for and is compatible with the idea of state-supported religious reform. Thus, the Indian constitution bans untouchability. The Indian state has enacted several laws abolishing child marriage and lifting the taboo on inter-caste marriage sanctioned by Hinduism.

एक तीसरी भिन्नता भी है। चूँकि धर्मनिरपेक्ष राज्य को अंतर–धार्मिक वर्चस्व के मसले पर भी समान रूप से चिंतित रहना है, अतः भारतीय धम निरपेक्षता में राज्य समर्थित धार्मिक सुधार की गुंजाइश भी है आर अनुकूलता भी। इसीलिए भारतीय संविधान ने अस्पृश्यता पर प्रतिबंध लगाया है। भारतीय राज्य ने बाल विवाह के उन्मूलन और अंतर्जातीय विवाह पर हिंदूधर्म के द्वारा लगाए निषेध को खत्म करने हेतु अनेक कानून बनाए हैं।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

The question however that arises is: can a state initiate or even support religious reforms and yet be secular? Can a state claim to be secular and not maintain separation of religion from state? The secular character of the Indian state is established by virtue of the fact that it is neither theocratic nor has it established any one or multiple religions. Beyond that it has adopted a very sophisticated policy in pursuit of religious equality. This allows it either to disengage with religion in American style, or engage with it if required.

बहरहाल, प्रश्न यह खड़ा होता है कि क्या कोई राज्य सुधारों की पहल या समर्थन करते हुए भी धर्मनिरपेक्ष बना रह सकता है? क्या धर्म और राज्य के बीच पूरी तरह से संबंध विच्छेद के बिना भी कोई राज्यसत्ता धर्मनिरपेक्ष होने का दावा कर सकती है? भारतीय राज्य का धर्मनिरपेक्ष चरित्र वस्तुतः इसी वजह से बरकरार है कि वह न तो धर्मतांत्रिक है और न ही वह किसी धर्म को राजधर्म मानता है। इसके परे, इसने धार्मिक समानता हासिल करने के लिए अत्यंत परिष्कृत नीति अपनाई है। इसी नीति के चलते वह अमेरिकी शैली में धर्म से विलग भी हो सकता है या ज़रूरत पड़ने पर उसके साथ संबंध भी बना सकता है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

The Indian state may engage with religion negatively to oppose religious tyranny. This is reflected in such actions as the ban on untouchability. It may also choose a positive mode of engagement. Thus, the Indian Constitution grants all religious minorities the right to establish and maintain their own educational institutions which may receive assistance from the state. All these complex strategies can be adopted by the state to promote the values of peace, freedom and equality.

भारतीय राज्य धार्मिक अत्याचार का विरोध करने हेतु धर्म के साथ निषेधात्मक संबंध भी बना सकता है। यह बात अस्पृश्यता पर प्रतिबंध जैसी कार्रवाइयों में झलकती है। वह जुड़ाव की सकारात्मक विधि भी चुन सकती है। इसीलिए, भारतीय संविधान तमाम धार्मिक अल्पसंख्यकों को अपनी खुद की शिक्षण संस्थाएँ खोलने और चलाने का अधिकार देता है जिन्हें राज्यसत्ता की ओर से सहायता भी मिल सकती है। शांति, स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को बढ़ाव देने के लिए भारतीय राज्यसत्ता ये तमाम जटिल रणनीतियां अपना सकती है।

CRITICISMS OF INDIAN SECULARISM

भारतीय धर्मनिरपेक्षता की आलोचनाएँ

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Anti-religious

First, it is often argued that secularism is anti-religious.

धर्म–विरोधी

पहला, अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि धर्मनिरपेक्षता धर्मविरोधी है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Western Import

A second criticism is that secularism is linked to Christianity, that it is western and, therefore, unsuited to Indian conditions.

पश्चिम से आयातित

दूसरी आलोचना यह है कि धर्मनिरपेक्षता ईसाइयत से जुड़ी हुई है, अर्थात यह पश्चिमी चीज़ है और इसीलिए भारतीय स्थितियों के लिए अनुपयुक्त है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Minoritism

A third accusation against secularism is the charge of minoritism.

अल्पसंख्यकवाद

तीसरी आलोचना के तौर पर धर्मनिरपेक्षता पर अल्पसंख्यकवाद का आरोप म

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Interventionist

A fourth criticism claims that secularism is coercive and that it interferes excessively with the religious freedom of communities.

अतिशय हस्तक्षेपकारी

चौथी आलोचना कहती है कि धर्मनिरपेक्षता उत्पीड़नकारी है और समुदायों की धार्मिक स्वतंत्रता में अतिशय हस्तक्षेप करती है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Vote Bank Politics

वोट–बैंक की राजनीति

Fifth, there is the argument that secularism encourages the politics of vote banks.

पाँचवां, तर्क यह दिया जाता है कि धर्मनिरपेक्षता वोट बैंक की राजनीति को बढ़ावा देती है।

Secularism धर्मनिरपेक्षता

Impossible Project

A final, cynical criticism might be this: Secularism cannot work because it tries to do too much, to find a solution to an intractable problem. What is this problem? People with deep religious differences will never live together in peace.

एक असंभव परियोजना

अंतिम उन्मादपूर्ण आलोचना यह हो सकती है कि "धर्मनिरपेक्षता नहीं चल सकती क्योंकि यह बहुत कुछ करना चाहती है, यह एसी समस्या का हल ढूँढ़ना चाहती है जिसका समाधान है ही नहीं।" यह समस्या क्या है? यही कि गहरे धार्मिक मतभेद वाले लोग कभी भी शांति से एक साथ नहीं रह सकते।